हमारा अस्तित्व किसके आधार पर

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अस्तित्व शरीर के आधार पर है या आत्मा के आधार पर यह जानना आवश्यक है। जो स्वयं विनाशी है और अपने अस्तित्व के लिए दूसरों पर निर्भर है वह अस्तित्वान कैसे हो सकता है? शरीर विनाशी है। पंचभूतों का समूह है। पंचभूत भौतिक हैं। इनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। आत्मा के आधार पर शरीर का अस्तित्व है। आत्मा के शरीर से निकल जाने पर शरीर अस्तित्वविहीन हो जाता है। गीता में कहा गया है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। शरीर मरण धर्मा है। आत्मा शाश्वत् है।

प्रारब्ध और उदय भाव के अनुसार कर्म शरीर परिवर्तित होता रहता है। कर्मों का फल भोगने के लिए कार्मण शरीर एक जन्म से दूसरे जन्म में आता–जाता रहता है। यही जीवात्मा है। जिस जीव का जैसा कर्म होता है उसे वैसा शरीर प्राप्त होता है। भेद कर्मों के कारण है। आत्मा के आधार पर सभी प्राणी समान है। सुख–दुःख की अनुभूति जीवों के पुण्य एवं पाप के अनुसार होता है। आत्मा भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में एक जैसा रहता है। आत्मा में परिवर्तन नहीं होता। आत्मा है तो शरीर है। आत्मा के न रहने पर शरीर को पंचतत्व में विलीन कर दिया जाता है। माटी का चोला माटी में मिल जाता है। शरीर का कोई भी अस्तित्व नहीं है। अस्तित्व केवल आत्मा का है।

सभी आस्तिक दर्शन किसी न किसी रूप में ईश्वर, आत्मा एवं परमात्मा के अस्तित्त्व में विश्वास करते हैं, क्योंकि आत्मा के अस्तित्त्व को माने बिना कर्म और पुनर्जन्म की व्याख्या ही नहीं की जा सकती। आत्मा ही एक ऐसा शाश्वत तत्त्व है जिसके आधार पर मानव अपने अस्तित्त्व को सिद्ध करता है। आत्मा दो प्रकार की है, एक जीवात्मा दूसरी परमात्मा। परमात्मा या ईश्वर सर्वज्ञ है, और एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न–भिन्न व्यापक और नित्य है। परमतत्त्व अंतिम तत्त्व है, सर्वाधार है, सभी वस्तुओं का मूलस्थान है। उसी को मूलतत्त्व कहा जा सकता

है, जिससे इस जगत् की उत्पत्ति हुयी है, जो सभी वस्तुओं की सत्ता का आधार है और जिसमें अन्ततः इन सभी वस्तुओं का लय हो जाता है। जगत् का आदि और अन्त ईश्वर को माना गया है। अतः ईश्वर ही परमतत्त्व है। इसे ही आत्मतत्त्व भी कहते हैं। समस्त विश्व का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता और नियन्ता है। ये ही सर्वज्ञ और सर्वअन्तर्यामी हैं। ये ही सम्पूर्ण जगत् के कारण हैं, क्योंकि सभी प्राणियों की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय के स्थान ये ही है। स्वरूप लक्षण वस्तु के तात्विक स्वरूप को प्रगट करता है।

ईश्वर को जगत् की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय का कारण कहा गया है। वे समस्त देवों तथा लोकों के उत्पत्ति स्थान हैं। स्थूल, सूक्ष्म, अव्यक्त, दो पैरों वाले और चार पैरों वाले सम्पूर्ण जीव समुदाय उन्ही की कृपा पर आश्रित हैं। वे ही परमेश्वर स्थितिकाल में समस्त ब्रह्माण्डों की रक्षा करते हैं तथा वे ही सम्पूर्ण जगत् के अधिपति और समस्त प्राणियों में अन्तर्यामी रूप से छिपे हुए है। ईश्वर के लिये विश्वकर्मा, महात्मा, लोगों के हृदय में निवास करने वाला, बुद्धि और मन से ध्यान में लाया हुआ तथा रहस्य को जानने वाला कहा गया है। इस प्रकार विश्वस्रष्टा के रूप में ब्रह्म का वर्णन किया गया है। आत्मा को अमर, नित्य तथा अपरिणामी कहा गया है। आत्मा न उत्पन्न होता है, न मरता है, यह न ही किसी अन्य कारण से ही उत्पन्न हुआ है और न स्वतः ही कुछ अर्थान्तररूप से बना है। यह अजन्मा नित्य–शाश्वत और पुरातन है तथा शरीर के नष्ट होने पर भी नहीं नष्ट होता।

गीता में भी कहा गया है कि यह आत्मा किसी काल में न तो जन्मता है और न मरता है तथा यह न उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता है। यदि मारने वाला आत्मा को मारने का विचार करता है और मारा जाने वाला उसे मारा हुआ समझता है तो वे दोनों ही उसे नहीं जानते, क्योंकि यह न तो मरता है और न मारा जाता है। गीता भी इसी बात को कहती है कि जो इस आत्मा को मारनेवाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते, क्योंकि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है। आत्मा की अनुभूति कैसे करें यह एक प्रश्न है। आत्मा की अनुभूति अनुभव जन्य है।

श्रमण परम्परा में केवलज्ञान हो जाने के बाद जीव ईश्वर बन जाता है। आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थिर हो जाता है। यह अवस्था परम आनन्द की अवस्था है। इस अवस्था में आत्मा पर कर्मों का आवरण नहीं रहता है। इस अवस्था में आत्मा परमात्मा बन जाता है। परमात्मा सिद्धशिला में विराजमान होता है। सभी जीवों में परमात्मा बनने की शक्ति निहित है। पुरुषार्थ के द्वारा आत्मा परमात्मा बन सकता है। सभी जीव पृथक–पृथक है और अपने कर्म के अनुसार सभी को मोक्ष मिलता है। आत्मा का त्रैकालिक अस्तित्व है। यह सचिदानन्द स्वरूप है। आत्मा अजर अमर और अविनाशी है। आत्मा के अस्तित्व से ही सभी अस्तित्ववान हैं।